(1)मुक्तक

कोरा कागज जब पैगाम बनकर आता है

मजमून होता भी है पर नजर नहीं आता

ये तो अब पढ़ने वाले के ऊपर है

कि उसे कहां तक पढ़ना आता है

(2)मुक्तक

गुलों की क्या सदा ये बेजुबान हैं

सदा से हमराज बने मोहब्बत के

बात तो तब है जब कोई कांटा

चुभे वो भी नायाब खामो ाी से

(3)मुक्तक

बेंगैरत लबों के लिए

नहीं जाम–ए–वफा होता

सोचेगा वो क्या अंजाम

जो पहले से ही तबाह होगा